

रविवार 30 मार्च, 2025

विषय— वास्तविकता

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 34: 15

"यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उसकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 3: 1, 3, 4, 6, 7, 12-14

- 1 सोहे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।
- 3 क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़ कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़ कर आदर रखता है।
- 4 क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है।
- 6 पर मसीह पुत्र की नाई उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।
- 7 सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो।
- 12 हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए।
- 13 वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।
- 14 क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 1 शमूएल 16: 7 (क्योंकि)

- 7 ... क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

2. मत्ती 11: 2-6, 15

- 2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा।
3 कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें?
4 यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो।
5 कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।
6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।
15 जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।

3. यूहन्ना 4: 3, 4, 7 (से:), 21-26, 28-30

- 3 तब यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।
4 और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था।
7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।
21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
22 तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।
23 परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सब्बे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूँढता है।
24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।
25 स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।
26 यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ॥
28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी।
29 आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यह तो मसीह नहीं है?
30 सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।

4. मत्ती 15: 1-3, 7-10

- 1 तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे।

- 2 तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?
- 3 उस ने उन को उत्तर दिया, कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?
- 7 हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की।
- 8 कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है।
- 9 और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।
- 10 और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो; और समझो।

5. मरकुस 10: 46-52

- 46 और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था।
- 47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।
- 48 बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
- 49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा, ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।
- 50 वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।
- 51 इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं।
- 52 यीशु ने उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया॥

6. यूहन्ना 21: 1-7 (से 1st), 12, 13

- 1 इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया।
- 2 शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे।
- 3 शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं मछली पकड़ने को जाता हूं: उन्होंने उस से कहा, हम भी तेरे साथ चलते हैं: सो वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।
- 4 भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है।
- 5 तब यीशु ने उन से कहा, हे बाल को, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं।

- 6 उस ने उन से कहा, नाव की दाहनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।
- 7 इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, यह तो प्रभु है: शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा।
- 12 यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और चेलों में से किसी को हियाव न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है? क्योंकि वे जानते थे, कि हो न हो यह प्रभु ही है।
- 13 यीशु आया, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।

7. यशायाह 55: 1, 3

- 1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
- 3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।

8. प्रकाशित वाक्य 2: 7

- 7 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 492: 3-4

सही तर्क के लिए, विचार से पहले केवल एक तथ्य होना चाहिए, अर्थात् आध्यात्मिक अस्तित्व।

2. 472: 24 (सब)-26

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है।

3. 207: 27-31

आध्यात्मिक वास्तविकता सभी चीजों में वैज्ञानिक तथ्य है। मनुष्य और पूरे ब्रह्मांड की कार्रवाई में दोहराया गया आध्यात्मिक तथ्य, सामंजस्यपूर्ण है और सत्य का आदर्श है। आध्यात्मिक तथ्य उलटे नहीं हैं; विपरीत विसंगति, जिसका आध्यात्मिकता से कोई संबंध नहीं है, वास्तविक नहीं है।

4. 275: 10-19

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

5. 84: 28-14

आत्मा के बारे में हम सभी सही रूप से जानते हैं कि ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत से आता है, और यह मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से सीखा जाता है। यदि इस विज्ञान को अच्छी तरह से सीखा और ठीक से पचा लिया गया है, तो हम सत्य को अधिक सटीक रूप से जान सकते हैं कि खगोलशास्त्री तारों को पढ़ सकते हैं या किसी ग्रहण की गणना कर सकते हैं। यह माइंड-रीडिंग क्लैरवायन्स के विपरीत है। यह आध्यात्मिक समझ की रोशनी है जो आत्मा की क्षमता को प्रदर्शित करती है, भौतिक अर्थ की नहीं। यह आत्मा-बोध मानव मन में तब आता है जब उत्तरार्द्ध दिव्य मन को उपजता है।

इस तरह के अंतर्ज्ञान से पता चलता है कि जो कुछ भी बनता है और सद्भाव को बनाए रखता है, एक को अच्छा करने में सक्षम बनाता है, लेकिन बुराई को नहीं। जब आप इस तरीके से मानव मन को पढ़ने और उस त्रुटि को समझने में सक्षम हो जाएंगे जिसे आप नष्ट कर देंगे तो आप उपचार के संपूर्ण विज्ञान तक पहुंच जाएंगे। सामरी स्त्री ने कहा: "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यह तो मसीह नहीं है?"

6. 339: 7 (चूँकि)-10

चूँकि ईश्वर सब है, इसलिए उसकी निष्पक्षता के लिए कोई जगह नहीं है। ईश्वर, आत्मा, अकेले सभी को बनाया, और इसे अच्छा कहा। इसलिए बुराई, अच्छे के विपरीत है, असत्य है, और भगवान का उत्पाद नहीं हो सकता है।

7. 208: 5-16

शास्त्र कहते हैं, "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।" फिर यह प्रतीत होने वाली शक्ति क्या है, जो ईश्वर से स्वतंत्र है, जो बीमारी का कारण बनता है और इसे ठीक करता है? यह विश्वास की त्रुटि, नश्वर मन का नियम, हर दृष्टि से गलत, पाप, बीमारी और मौत को गले लगाने के अलावा क्या है? यह सत्य के, और आध्यात्मिक नियम के अमर मन के बिल्कुल विपरीत है। यह परमेश्वर के व्यवहार की भलाई के अनुसार नहीं है कि वह मनुष्य को बीमार कर दे, फिर मनुष्य को खुद को ठीक करने के लिए छोड़ दे; यह मानना बेतुका है कि सामग्री बीमारी का कारण और इलाज दोनों कर सकती है, या यह कि आत्मा, ईश्वर, बीमारी पैदा करता है और सामग्री पर अपना उपचार छोड़ देता है।

8. 129: 21-29

हमें औषध विज्ञान का परित्याग करना चाहिए, और ऑन्कोलॉजी को अपनाना चाहिए, - "वास्तविक होने का विज्ञान।" हमें केवल बाहरी अर्थों को स्वीकार करने के बजाय यथार्थवाद में गहराई से देखना चाहिए। क्या हम चीड़ के पेड़ से आड़ू इकट्ठा कर सकते हैं, या कलह से होने की सहमति सीख सकते हैं? फिर भी, मनुष्यों के बीच सुधारात्मक मिशन में विज्ञान को जिस मार्ग पर चलना है, उसके कुछ प्रमुख भ्रम भी उतने ही तर्कसंगत हैं। भ्रम नाम ही शून्यता की ओर संकेत करता है।

9. 85: 23-28

यहूदी और अन्यजातियों में तीव्र शारीरिक संवेदनाएं हो सकती हैं, लेकिन नश्वर लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। यीशु जानता था कि वह पीढ़ी दुष्ट और व्यभिचारी है, वह आध्यात्मिक से अधिक सामग्री की तलाश में है। भौतिकवाद पर उनका जोर तेज था लेकिन महत्वपूर्ण था। उन्होंने कभी भी कठोर निंदा को पाखंड नहीं दिया।

10. 237: 15-32

बच्चों को उनके पहले पाठों में से सत्य-उपचार, ईसाई विज्ञान पढ़ाया जाना चाहिए, और बीमारी के बारे में सिद्धांतों या विचारों पर चर्चा या मनोरंजन से दूर रहना चाहिए। त्रुटि के अनुभव और उसके कष्टों को रोकने के लिए, अपने बच्चों के मन से पापी या रोगग्रस्त विचारों को दूर रखें। उत्तरार्द्ध को पूर्व के समान सिद्धांत पर बाहर रखा जाना चाहिए। यह ईसाई विज्ञान को जल्दी उपलब्ध कराता है।

कुछ इनवैलिड्स तथ्यों को जानने या मामले की भ्रांति और इसके कथित कानूनों के बारे में सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपने भौतिक देवताओं के लिए थोड़ा अधिक समय समर्पित करते हैं, जीवन और पदार्थ की बुद्धि में विश्वास से चिपके रहते हैं, और यह अपेक्षा करते हैं कि यह त्रुटि उनके लिए और अधिक करेगी, जो वे एकमात्र जीवित और सच्चे ईश्वर को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। आपके स्पष्टीकरण पर अधीर, मन के विज्ञान की जांच करने के लिए अनिच्छुक, जो उन्हें उनकी शिकायतों से छुटकारा दिलाएगा, वे झूठे विश्वासों को गले लगाते हैं और भ्रामक परिणाम भुगतते हैं।

11. 264: 13-31

जैसा कि नश्वर भगवान और मनुष्य के बारे में अधिक सही दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, सृष्टि की बहुपक्षीय वस्तुएं, जो पहले अदृश्य थीं, दृश्यमान हो जाएंगी। जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी नहीं, न ही इस मामले में, यह समझ आत्म-पूर्णता में विस्तारित होगी, सभी को ईश्वर में मिल जाएगी, अच्छा होगा, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता नहीं होगी।

आत्मा और उसके स्वरूप ही होने का एकमात्र यथार्थ हैं। आत्मा के माइक्रोस्कोप के तहत पदार्थ गायब हो जाता है। सत्य से पाप का नाश होता है, और बीमारी और मृत्यु को यीशु ने दूर किया, जिन्होंने उन्हें त्रुटि का रूप दिया। आध्यात्मिक जीवन और आशीर्वाद ही प्रमाण हैं, जिसके द्वारा हम सच्चे अस्तित्व को पहचान सकते हैं और उस अकथनीय शांति को महसूस कर सकते हैं जो आध्यात्मिक प्रेम को अवशोषित करने से आती है।

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखते हैं और मनुष्य के आध्यात्मिक होने को पहचानते हैं, तो हम भगवान की रचना को समझेंगे और समझेंगे, - पृथ्वी और स्वर्ग और मनुष्य की सभी महिमा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरी बेकर एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6